Seventeenth Loksabha

>

Title: Request to take strict action against the Profesor of BHU, Uttar Pradesh.

डॉ. संघमित्रा मौर्य (बदायूं): अध्यक्ष जी, आपने मुझे शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर अपनी बात रखने का मौका दिया है, मैं इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार व्यक्त करती हूं ।

अध्यक्ष जी, हमारे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी इस देश को पुन: विश्व गुरू बनाने की ओर लगातार प्रयासरत हैं । उत्तर प्रदेश के बीएचयू में एक प्रोफेसर जिनकी नियुक्ति पॉलिटिकल साइंस के लिए हुई थी और वे सोशल साइंस फैकल्टी के डीन हैं, संसदीय नियमानुसार मैं उनका नाम नहीं ले रही हूं । अभी हाल ही में, विश्वविद्यालय कैम्पस के अंदर वे छात्रों को उपले बनाने, अर्थात गोबर पाथने की विधि बता रहे थे । निश्चित तौर पर बीएचयू जैसे कैम्पस में यदि एक प्रोफेसर छात्रों को उपले बनाने की विधि बतायेगा, तो हम अन्य विद्यालयों या विश्वविद्यालयों की कैसे उच्च स्तर की शिक्षा की बात कर सकते हैं?

अध्यक्ष जी, प्रोफेसर साहब का बच्चों के प्रति इस तरह का व्यवहार सिर्फ निन्दनीय ही नहीं है, बल्कि चिन्तनीय भी है, छात्रों के प्रति ही नहीं, बल्कि देश के प्रति भी । ऐसे मौके पर हमें महात्मा ज्योतिबा राव फुले जी के द्वारा कही गई लाइन याद आती है, "विद्या बिन मति गई, मति बिन नीति गई, नीति बिन गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद्र हुआ", अर्थात जब एक विद्या के कारण इतने सारे नुकसान होते हैं, तो एक विद्या के मन्दिर में विद्या के साथ, छात्रों के साथ ऐसा खिलवाड़ क्यों?

मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहती हूं कि शिक्षा के मन्दिर में इस तरह की हरकत करने वाले शिक्षकों के प्रति कड़ी से कड़ी कार्रवाई हो, जिससे हमारे छात्रों का जीवन भी सुरक्षित रह सके और हमारा देश आगे बढ़ सके ।

आदरणीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में यह देश पुनः विश्व गुरू बनने की ओर बढ़ेगा और यह तभी होगा जब हमारे बच्चे सुरक्षित होंगे, शिक्षित होंगे ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हुए, मैं एक बार पुनः यही मांग करती हूं कि ऐसे शिक्षकों के प्रति कार्रवाई होनी चाहिए ।